तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन

मूलसूत्र

हितोपदेशी | वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

सर्वज्ञ | प्रयोजन - भावना

निश्चयसम्यग्दर्शनादि का उपाय

प्रमाणनयैरधिगमः ॥६ ॥

अर्थ—सम्यग्दर्शनादि रत्नत्रय और जीवादि तत्त्वों का [अधिगमः] ज्ञान, [प्रमाणनयैः] प्रमाण और नयों से होता है।

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र ६

विषय-वस्तु

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
निश्चय मोक्षमार्ग की व्याख्या	१	१
निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण	२	१
निश्चय सम्यग्दर्शन के भेद	३	१
तत्त्वों के नाम	४	१
निश्चयसम्यग्दर्शनादि शब्दों के अर्थ समझने की रीत	५	१
निश्चयसम्यग्दर्शनादि मुख्य एवं अमुख्य उपाय	६-८	३

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र ७

निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के अमुख्य उपाय

निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः ॥ ७ ॥

अर्थ – [निर्देश स्वामित्व साधन अधिकरण स्थिति विधानतः]

निर्देश, स्वामित्व, साधन, अधिकरण, स्थिति और विधान से भी सम्यग्दर्शनादि तथा जीवादिक तत्त्वों का अधिगम होता है।

अध्याय १: सूत्र ७ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के अमुख्य उपाय

निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः।।७।। - सूत्र का स्पष्टीकरण

सम्यग्दर्शनादि रत्नत्रय और जीवादि तत्त्व [सूत्र १-४]

↓

निक्षेप [सूत्र ५]

- के जानने के उपाय [सूत्र ६-प्रमाण , नय]
- के जानने के उपाय [सूत्र ७-निर्देशादि]

अध्याय १: सूत्र ७ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के अमुख्य उपाय

निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः।।७।। - सूत्र की विषयवस्तु

विषय	विषय-वस्तु
निर्देश	वस्तुस्वरूप के कथन को निर्देश कहते हैं।
स्वामित्व	वस्तु के अधिकारीपन को स्वामित्व कहते हैं।
साधन	वस्तु की उत्पत्ति के कारण को साधन कहते हैं।
अधिकरण	वस्तु के आधार को अधिकरण कहते हैं।
स्थिति	वस्तु के काल की मर्यादा को स्थिति कहते हैं।
विधान	वस्तु के भेदों को विधान कहते हैं।

अध्याय १: सूत्र ७ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के अमुख्य उपाय

निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानत:।।७।। - ६ प्रकार से सम्यग्दर्शन का वर्णन

विषय	विषय-वस्तु
निर्देश	जीवादि सात तत्त्वों की यथार्थ श्रद्धापूर्वक, निज शुद्धात्मा का प्रतिभास विश्वास प्रतीति को निर्देश कहते हैं।
स्वामित्व	चारों गति के संज्ञी पंचेन्द्रिय भव्य जीव स्वामी होते हैं।
साधन	साधन के दो भेद है--अन्तरङ्ग और बाह्य [विशेष चर्चा आगे-स्लाईड]
अधिकरण	सम्यग्दर्शन का अन्तरङ्ग आधार आत्मा है और बाह्य आधार त्रसनाली है।
स्थिति	[विशेष चर्चा आगे-स्लाईड]
विधान	[विशेष चर्चा आगे-स्लाईड]

निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानत:।।७।। - सम्यग्दर्शन का साधन

सम्यग्दर्शन का साधन

- **अन्तरङ्ग कारण** — स्व शुद्धात्मा के त्रिकाली ज्ञायकभाव का आश्रय है।
- **बाह्य कारण**
  - तिर्यञ्च और मनुष्य — १] जातिस्मरण , २] धर्मश्रवण , ३] जिनबिम्ब दर्शन
  - देव-१२वें स्वर्ग से पहले — १] जातिस्मरण , २] धर्मश्रवण , ३] जिनकल्याणक दर्शन , ४] देवऋद्धि
  - देव-१२-१६वें स्वर्गपर्यन्त — १] जातिस्मरण , २] धर्मश्रवण , ३] जिनकल्याणक दर्शन
  - ९ ग्रैवेयक — १] जातिस्मरण , २] धर्मश्रवण
  - ३रे नरक तक — १] जातिस्मरण , २] धर्मश्रवण , ३] दु:खानुभव
  - ४थें से ७वें नरक तक — १] जातिस्मरण , २] दु:खानुभव

निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानत:।।७।। - सम्यग्दर्शन की स्थिति

- सम्यग्दर्शन की स्थिति
  - जघन्य
    - ३ प्रकार के सम्यग्दर्शन की जघन्य से जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त है।
  - उत्कृष्ट
    - औपशमिक
      - अन्तर्मुहूर्त
    - क्षायोपशमिक
      - ६६ सागर
    - क्षायिक
      - मोक्ष = सादि-अनन्त
      - संसार = ३३ सागर तथा अन्तर्मुहूर्त सहित ८ वर्ष कम दो कोडी पूर्व

अध्याय १: सूत्र ७ - निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के अमुख्य उपाय

निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानत:।।७।। - सम्यग्दर्शन का विधान

- सम्यग्दर्शन का विधान
  - विधान — सम्यग्दर्शन
  - स्वपर्याय की योग्यता अनुसार
    - औपशमिक
    - क्षायोपशमिक
    - क्षायिक
  - १० भेदरूप — आज्ञा, मार्ग, बीज, उपदेश, सूत्र, संक्षेप, विस्तार, अर्थ, अवगाढ़ और परमावगाढ़

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र ७

विषय-वस्तु

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
निश्चय मोक्षमार्ग की व्याख्या	१	१
निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण	२	१
निश्चय सम्यग्दर्शन के भेद	३	१
तत्त्वों के नाम	४	१
निश्चयसम्यग्दर्शनादि शब्दों के अर्थ समझने की रीत	५	१
निश्चयसम्यग्दर्शनादि मुख्य एवं अमुख्य उपाय	६-८	३

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र ८

निश्चयसम्यग्दर्शनादि जानने के अमुख्य उपाय

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च ॥ ८ ॥

अर्थ - (च) और (सत् संख्या क्षेत्र स्पर्शन काल अन्तर भावाल्पबहुत्वैः) सत्, संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव और अल्पबहुत्व, इन आठ अनुयोगों के द्वारा भी पदार्थ का ज्ञान होता है।

जिनवाणी स्तुति